P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# टोंक जिले में बिसलपुर बाँध पर्यटन स्थल का स्थानिक प्रारूप :– एक आर्थिक विश्लेषण

**सावित्री मीणा**
भूगोल विभाग,
शोधार्थी,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा

**एन.के. जेतवाल**
विभागाध्यक्ष,
भूगोल विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बून्दी

**एस.सी. कलवार**
सेवानिवृत,प्रोफेसर
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

**सारांश**

मनुष्य की प्रवृत्ति प्राचीन काल से ही भ्रमणशील रही है। उत्सुकतावश एवं परिस्थितिवश मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करता रहा है। वर्तमान में यही पर्यटन कहलाता है। पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो मनोरंजन या आनन्द उठाने के उद्देश्य से की जाती है। वर्तमान में पर्यटन दुनियाभर में आरामपूर्ण गतिविधि के रूप में लोकप्रिय हो गया है। यह भारत व राजस्थान का बहुत बड़ा उद्योग बन चुका है। भारत में पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान का विशेष महत्व है। उत्तरी भारत में राजस्थान सबसे आकर्षित पर्यटन स्थल है। राजस्थान के पर्यटन स्थलों ने अपनी प्राकृतिक रमणीयता और सुन्दरता से पर्यटकों को आकर्षित किया है।

**मुख्य शब्द :** टोंक, देवली, बीसलपुर बाँध, पर्यटन स्थल, आर्थिक विश्लेषण।

**प्रस्तावना**

राजस्थान की संस्कृति से आकर्षित होकर प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में देशी एवं विदेशी पर्यटक यहाँ आते है। राजस्थान में पर्यटन व्यवसाय की विपुल संम्भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए राज्य सरकार ने पर्यटन को विशिष्ट दर्जा देते हुऐ 1989 में इसे उद्योग घोषित कर दिया था।

टोंक जिला पर्यटन की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है यहाँ अनेक ऐतिहासिक व धार्मिक दर्शनीय स्थल होते हुए भी पर्यटन का विकास नहीं हो सका है। स्थलों का विकास कर पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है। पर्यटन विभाग द्वारा इनका प्रचार–प्रसार किया जाना आवश्यक है। इन सम्भावित पर्यटन क्षेत्रों एवं अन्य पर्यटन क्षेत्रों का विकास किया जाए तो सरकार को प्रतिवर्ष टोंक जिले से प्राप्त होने वाली आमदनी में वृद्धि होगी। और आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। यदि पर्यटन विभाग का कार्यालय यहां स्थापित कर पर्यटन स्थलों एवं संभावित पर्यटन स्थलों का विकास किया जाए तो टोंक जिला पर्यटन मानचित्र पर उभर सकता है। टोंक जिले की आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. जिले में विद्यमान पर्यटन स्थलों का स्थानिक प्रारूप प्रस्तुत करना।
2. जिले के पर्यटन स्थलों की भ्रमण योजना तैयार करना।
3. आर्थिक दृष्टि से पर्यटन विकास से लाभ का विवेचन प्रस्तुत करना।
4. टोंक जिले में बिसलपुर बांध पर रंगीन मछली उत्पादन केन्द्र से बढ़ा पर्यटन स्थल के विकास को प्रस्तुत करना।

**अध्ययन क्षेत्र**

राजस्थान के दक्षिणी पूर्वी भाग में स्थित हैं अध्ययन क्षेत्र टोंक जिला कृषि प्रधान क्षेत्र है। टोंक जिले का आकार पतंगाकार हैं। जो $25^0 41'$ एवं $26^0 34'$ तक उत्तरी अक्षांश तथा $75^0 07'$ एवं $76^0 19'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित टोंक जिले की सीमा उत्तर में जयपुर, दक्षिण में बून्दी एवं भीलवाड़ा, पश्चिम में अजमेर और पूर्व में सवाई माधोपुर जिले से मिलती है। जिले का भौगोलिक धरातल लगभग समतल है। यह जिला समुद्र तल से 264.32 मीटर ऊँचा है। जिले की महत्वपूर्ण बनास नदी इसे दो भागों में विभाजित करती है। अध्ययन क्षेत्र का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 7194 वर्ग किलोमीटर है। जिसमें 6952.13 वर्ग किलो मीटर क्षेत्र ग्रामीण व 241.87 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र शहरी है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

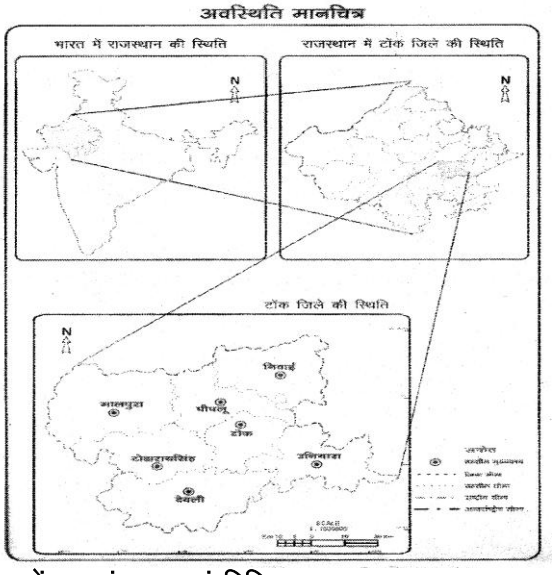


**आकड़ों का संकलन एवं विधि तन्त्र**

अध्ययन क्षेत्र के पर्यटन स्थलों से सम्यहां बंधित द्वितीयक आँकड़े ऐतिहासिक तथा धार्मित ग्रन्थ गजेटियर पर्यटन विभाग, टोंक, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं से प्राप्त किये गये है। प्राथमिक आंकड़े पर्यटन क्षेत्र में आने वाले पर्यटक स्थानीय निवासी, पर्यटन उद्योग में शामिल विभिन्न वर्गो से अनुसूची, प्रश्नावली एवं साक्षात्कार द्वारा महत्वपूर्ण सूचनाओं व सुझावों का संकलन किया है।

क्षेत्रीय सर्वेक्षण के आधार पर शोधकर्त्री द्वारा पर्यटन स्थलों की भ्रमण योजना तैयार की गयी है।

प्राप्त आँकड़ों का सारणीय, वर्गीकरण व विश्लेषण हेतु आवश्यक सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करते हुए शोध पत्र का निर्माण किया गया है।

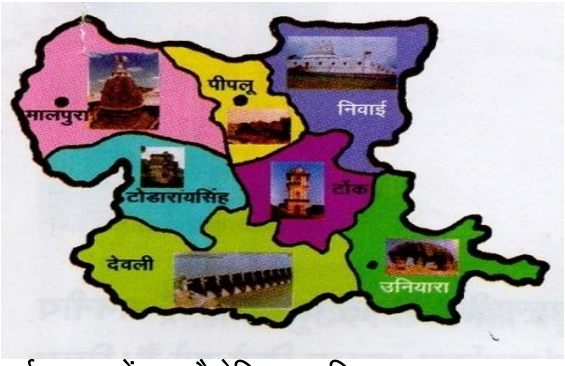


**पर्यटन स्थलों का भौगोलिक स्थानिक प्रारूप**

टोंक जिले के उत्तरी–पूर्वी, पूर्वी–दक्षिणी भाग में पर्यटन स्थल है। इस पर्यटन क्षेत्र के अधिक विकसित होने का कारण जयपुर पर्यटन क्षेत्र का समीप होना है। निवाई तहसील से 25 किमी दूर अवस्थित है जहां वनस्थली विद्यापीठ है। जो रेलवे स्टेशन की सुविधा प्रदान करता है। निवाई से ही बून्दी, कोटा, चित्तौड़गढ़, जयपुर, अजमेर, उदयपुर जैसे पर्यटन नगरों से जुड़ा है।

टोंक शहर व मालपुरा तहसील पर्यटन का बड़ा भाग अपने में समेटे हुए है। इसके बाद सबसे ज्यादा पर्यटन स्थल निवाई, उनियारा तहसील तक फैले है। टोंक मुख्यालय में भी पर्यटन के स्थल है। जामा मस्जिद, अरबी पारसी अनुसंधानक, सुनहरी कोठी, घण्टाघर, अन्नपूर्णा डूंगरी आदि है। मालपुरा में श्री कल्याण जी का बहुत बड़ा मंदिर है। यहाँ पर हर वर्ष देशी–विदेशी पर्यटक आते हैं।

टोंक जिले के पर्यटन स्थलों को भौगोलिक स्थानिक प्रारूप की दृष्टि से निम्न भागों में विभाजित किया गया है।

1. मध्यवर्ती पर्यटन क्षेत्र – टोंक
2. उत्तरी–पश्चिमी क्षेत्र – मालपुरा तहसील
3. दक्षिण पर्यटन क्षेत्र – उनियारा तहसील
4. दक्षिणी – पश्चिमी क्षेत्र – देवली तहसील
5. पश्चिमी पर्यटन क्षेत्र – टोडारायसिंह

**पर्यटन स्थलों की भ्रमण योजना**

टोंक जिला मुख्यालय से पर्यटन स्थलों का अवलोकन करने में लगभग 3 दिन के अन्तर्गत सम्पूर्ण जिले के तहसीलवार पर्यटन स्थलों का भ्रमण किया जा सकता है।

**बिसलपुर बाँध पर्यटन स्थल के रूप में**

बिसलपुर बाँध के समीप बन रहे रंगीन मछली उत्पादन केन्द्र के पूरे होने से इस क्षेत्र में पर्यटन को अधिक बढावा मिला है। बिसलपुर बाँध व आस–पास के क्षेत्र में पर्यटकों को अधिक आकर्षित किया है, जिसे देखने के लिए देशी–विदेशी पर्यटक यहाँ पर आ रहे है। जिससे आर्थिक विकास भी हो रहा है। इसको बढ़ावा देने के लिये राज्य सरकार ने 2016 में लगभग 4 करोड़ रूपये की राशि स्वीकृत की गई हैं, जिससे पर्यटकों की संख्या में बढोतरी हो। यहां पर मत्स्य लेंडिंग सेंटर के नाम से केन्द्र खोला गया है। जिसका नाम रंगीन मछली प्रजनन केन्द्र रखा गया है। इनका उद्देश्य पर्यटकों को आकर्षित करना है।

**देशी–विदेशी पर्यटकों की संख्या एवं प्रवृति**

टोंक के सन्दर्भ में देखे तो लिये गये आँकड़ो के ज्ञात होता है कि सन् 2001 में देशी पर्यटक का आगमन विदेशी पर्यटक से अधिक है क्योंकि पर्यटक, पर्यटन स्थल पर आने से पहले उसके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करते है, साथ ही गन्तव्य स्थान पर उनके लिए पूर्ण सुविधा व सुरक्षा है या नहीं उसके बारे में जानकारी रखकर ही पर्यटन स्थल पर आते है। टोंक जिले में देशी पर्यटकों की

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तुलना में विदेशी पर्यटक एक चौथाई से भी कम आते है। सन् 2002 में 2001 की अपेक्षा देशी–विदेशी पर्यटकों में डेढ़ गुना बढ़ोत्तरी हुई जबकि 2003 की अपेक्षा तुलना में 2012 में देशी–विदेशी पर्यटकों में कमी आई। 2015 में पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई जिसमें 1315 विदेशी व 9120 देशी पर्यटक थे।

**Table - 1.2 Tonk District**
**Taurists Arrival (Year 2001-2017) तक**

| सन् | विदेशी | देशी | कुल |
|---|---|---|---|
| 2001 | 925 | 2035 | 2960 |
| 2002 | 1020 | 2250 | 3270 |
| 2003 | 815 | 3008 | 3823 |
| 2004 | 875 | 3050 | 3925 |
| 2005 | 986 | 4060 | 5046 |
| 2006 | 1005 | 4185 | 5190 |
| 2007 | 1115 | 4905 | 6020 |
| 2008 | 1187 | 5016 | 6203 |
| 2009 | 1195 | 5785 | 6980 |
| 2010 | 1207 | 6010 | 7217 |
| 2011 | 1297 | 7120 | 8417 |
| 2012 | 4950 | 6250 | 7200 |
| 2013 | 1205 | 8750 | 9955 |
| 2014 | 1296 | 8920 | 10216 |
| 2015 | 1315 | 9120 | 10435 |
| 2016 | 1420 | 10025 | 11445 |
| 2017 | 1612 | 10950 | 12562 |

स्त्रोत – अरबी –पारसी अनुसंधान टोंक

पर्यटन विकास के कार्यक्रमों से पर्यटकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। 2013–16 तक विदेशी पर्यटकों में लगातार वृद्धि हुई है। इसके बाद के वर्षो में संख्या घटती–बढ़ती रही है। स्वदेशी पर्यटकों की अगस्त 2017 तक 612 विदेशी व 10950 देशी पर्यटक भ्रमण हेतु आये।

## आर्थिक दृष्टि से पर्यटन विकास से लाभ

सरकार ने 2003 से 2007 तक केन्द्रीय प्रवर्तित योजना, राज्य योजना, जिला योजना व अन्य सड़क योजना निर्माण योजनाओं द्वारा पर्यटन विकास में कुल 35. 10 करोड़ रूपये खर्च किए है। जिसमें नगर स्वच्छता, पर्यटन स्थलों के सौन्दर्यकरण व विद्युतीकरण, पर्यटक स्वागत केन्द्र निर्माण एवं उद्यान व वृक्षारोपण आदि में 2. 23 करोड़ रूपये खर्च हुई, जबकि सड़क निर्माण व सुदृढ़ीकरण कार्यो में लगभग 18.50 करोड़ रूपये खर्च हुए है।

सर्वे के अनुसार पाया गया है कि प्रत्येक विदेशी पर्यटक एक दिन के औसत 750 रूपये तथा स्वदेशी पर्यटक एक दिन के औसत 300–350 रूपये खर्च करता है। यदि प्रत्येक पर्यटक को एक दिन ही ठहरा माना जाये तो 2004–17 तक कुल 19425 पर्यटक विदेशी व 101439 पर्यटक स्वदेशी टोंक भ्रमण पर आए तो एक दिन की पर्यटन से प्राप्त आय तालिका 1.3 जबकी प्राप्त आय 50. 06 करोड़ रूपये ही है।

लेकिन पर्यटकों से प्राप्त आय के आँकड़ो में वृद्धि हो सकती है। क्योंकि कुछ पर्यटक 2–3 दिन या इससे भी ज्यादा दिन तक ठहरते है। इस दृष्टि से पर्यटन से अभी उतना लाभ नहीं हुआ जितना होना चाहिए।

इन आँकड़ों से यह निष्कर्ष निकलता है कि 2004–2017 तक पर्यटन विकास में किए गए खर्च से विकसित पर्यटन उद्योग वर्तमान समय में प्रमुख आय का साधन बन पड़ा है। जिससे भविष्य में पर्यटन उद्योग में अधिक लाभ होगा। तालिका–1.3

**Table - 1.3 Tonk District**
**Income from Tourists (2004 to Aug 2017) तक**

| Tourist 2004 -2017 | No | Aug. Exp./ Day Rs. | Total Income (Crore Rs.) |
|---|---|---|---|
| विदेशी / Foreign | 19425 | 750 | 14.56 |
| Indian/ देशी | 101439 | 350 | 35.50 |
| Total / कुल | 120864 | 1100 | 50.06 |

Source - Calculation by Author

**Table - 1.3 Tonk District**

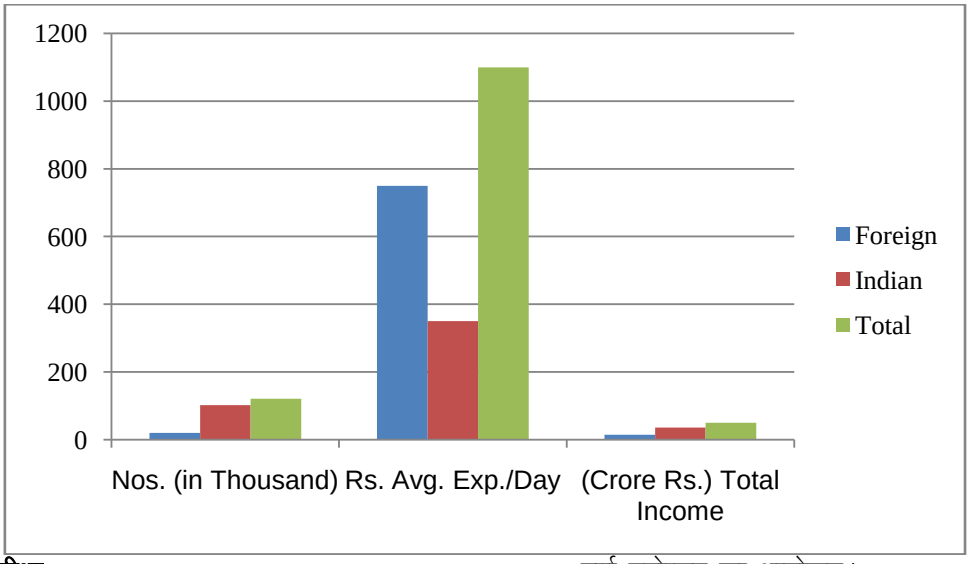


## निष्कर्ष एवं समीक्षा

1. टच स्क्रीन कियोस्क की स्थापना।
2. वर्षा महोत्सव का आयोजन।
3. मालपुरा में (डिग्गी) आध्यात्मिक पर्यटन केन्द्र बनाना।

4. टोंक जिले में पर्यटन विभाग की स्थापना करना।
5. थीम वाटिकाओं का निर्माण।
6. टोंक शहर में चिड़ियाघर की स्थापना।
7. ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों को बढ़ावा देना।
8. भ्रमण–योजना के अनुसार देशी व विदेशी पर्यटकों को 4 दिन तक जिले का भ्रमण करवाकर अधिक से अधिक रोजगार प्राप्त किया जा सकता है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *टोंक जिला ''एक दृष्टि में'' वर्ष 2018 आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग टोंक (राज.), पृष्ठ 13*
2. *राजस्थान जिला गजेटियर टोंक– 2017*
3. *सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय, टोंक*
4. *अरबी–पारसी अनुसंधान केन्द्र टोंक से प्राप्त आँकड़े– 2017, पृष्ठ 68*
5. *राजस्थान पत्रिका टोंक 20'अग.–18 पृष्ठ 3 एवं दैनिक भास्कर टोंक 20'अग.–18 पृष्ठ 3*
6. *महात्मा गांधी पुस्तकालय टोंक*